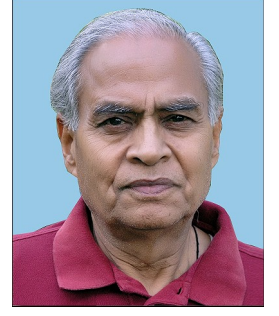


"धर्म-निरपेक्षता किधर?"

जगदीश चन्द्र पन्त



केवल अधर्म ही धर्म-निरपेक्ष हो सकता है! क्या इसी लिये आज भारत में अधर्म का बोल बाला है? वह क्या मजबूरी थी जिसके कारण इंदिरा गाँधी को भारत के संविधान के preamble में 1976 के आपातकाल के समय Socialist Secular शब्द जोड़ने पड़े थे ? Socialist शब्द तो इंदिरा गाँधी की आपातकाल से पहिले की राजनीति के आग्रह से आया और मूलतः secularism की अवधारणा भारत में आज़ादी से लगभग दस वर्ष पूर्व और उसके हासिल होने के समय उपजी, साम्प्रदायिक हिंसा की भावना को दबाने के लिये की गई थी | लेकिन परिणाम इसका उल्टा ही हुआ | मुस्लिम समाज के बड़े नेता सम्पन्न विदेशी मूल की अशरफ जाति के परिवारों से अधिकतर आये हैं, जिन्हें भारतीय मूल की अजलफ जाति के गरीबों को गरीब ही रहने देना था और उनको, अपनी गरीबी भुलाने के लिये और मुस्लिम समाज को, अल्प-संख्यक-वाद पर आधारित वोट की राजनीति के लिये अपनी पहिचान को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से, अपने विशिष्ट पहनावे पर और दिन में पांच बार नमाज पढ़ने पर जोर देना पड़ा | दूसरी ओर धर्म-निरपेक्षता की आड़ में और भारत के धार्मिक स्वतंत्रता के वातावरण में, विदेशों से पोषित ईसाई धर्म के प्रचारकों को भारत के विभिन्न भागों में, धर्मांतरण की गतिविधियों को तेज करने के लिये प्रोत्साहन मिला, जिसके साथ साथ उन्होंने कालांतर में तथाकथित दलित जातियों और जन जातियों में भारत सरकार तथा सनातन आर्य धर्म के विरुद्ध असंतोष पैदा कर, देश के बड़े भूभाग में माओवाद को बढ़ने में सहायता की | इसके साथ साथ "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अपनी परम्परागत अवधारणा में दृढ विश्वास रखने वाले सनातन आर्य धर्म के बहुसंख्यक समुदाय के लोगों में, धर्म-निरपेक्षता के सिद्धांत के कारण यह भावना पैदा हुई कि धर्म की चर्चा सामान्य समाज में करना अनुचित होगा | जब ऐसी स्थिति समाज में स्थाई हुई, तो स्वाभाविक ही था कि युवा वर्ग में विशेष रूप से, धर्माचरण एवं सदाचरण की बात भी धीरे धीरे समाप्त होती चली गई | इसमें आश्चर्य क्या है ? Television पर आज विज्ञापनों और कथानकों के द्वारा अधर्म का जो आचरण परोसा जा रहा है, तब परिणाम स्वरूप अधर्म का जो बोल बाला आज समाज में देखने को मिल रहा है, उसमें आश्चर्य क्यों ? क्या यह आवश्यक नहीं कि अब यह प्रश्न उठाया जाय कि आज भारत में आखिर धर्म शब्द का अर्थ क्या माना जा रहा है, अथवा जब भारत आज़ाद हुआ था तब क्या माना जा रहा था, जिसकी चर्चा ही करना निषिद्ध समझा जाने लगा है ?

2 . भारतीय संस्कृति की संवाहक भाषा संस्कृत के अंतर्गत "धर्म" शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है ? "धारयते इति धर्मः" - जो हर वस्तु को अपने स्वरूप में स्थिर रखता है वही उसका धर्म है | केवल इंसानों का ही धर्म नहीं होता, हर जीव और हर वस्तु का भी धर्म होता है | "धर्म" शब्द में ही पर्यावरण की सुरक्षा निहित है, जिसका ह्रास भी आज देखने को मिल रहा है | इस शब्द के अन्य सामान्य अर्थ - कर्तव्य पालन, सदाचरण, उपयुक्त व्यवहार, न्यायसंगत, पुण्य, नैतिकता, सत्कर्म आदि, जिनमें जिस अर्थ में religion शब्द का आभास अंग्रेजी भाषा में एक सम्प्रदाय के विश्वासों के रूप में होता है, वह इस संस्कृत शब्द से कतई नहीं होता | secular और sacred की अवधारणा यूरोप में सोलहवीं शताब्दी

के समय इसाई धर्म और विज्ञान के परस्पर विवाद पैदा होने के कारण उत्पन्न हुई थी, जिसके कारण दोनों को अलग अलग रखने पर वहां आम सहमती हुई थी, जो भारत के आज़ाद होने के समय बिना भारतीय संस्कृति में प्रचलित "धर्म" शब्द के अर्थ पर विचार किये हुवे ही, इस देश पर लागू कर दी गयी थी | धर्म शब्द को सामाजिक व्यवहार से बाहर करने का कालांतर में परिणाम भारत में क्या होगा, इसका अनुमान आज़ादी की खुशियाँ मानते समय देश के बड़े नेता क्यूँ नहीं लगा पाये, यह भी एक शोध का विषय होना चाहिये | संभवतः, यदि धर्म-निरपेक्ष शब्द के स्थान पर पंथ-निरपेक्ष शब्द का प्रचलन हुआ होता तो परिणाम आज के मुकाबले कम हानिकारक होते अथवा अधिक उपयुक्त रहते | अब तो जो नुकसान देश को होना था सो हो गया है, आज की विषम परिस्थिति से अब कैसे निपटा जाय ? इसी बिंदु पर विचार करने के लिये यह लेख प्रस्तुत किया जा रहा है |

3 . भारत का स्वतंत्रता संग्राम पूरे विश्व के गुलाम देशों की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करने वाला साबित हुवा | इसके लिये पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों ने भारत को कभी क्षमा नहीं किया और आज़ादी के आरम्भ से ही इस देश को और खंडित करने के षडयंत्र चालू हो गये | भारत पर अपना कब्ज़ा मजबूत करने के लिये East India Company ने भारत में अपने पांव ज़माने की रणनीति आरम्भ से ही सोचनी शुरू कर दी थी | William Jones और Max Muller जैसे विद्वान वेद और उपनिषदों के आर्ष संस्कृत साहित्य से इतने प्रभावित हुवे कि उनके मुहं में पानी आ गया और तभी से उसको हड़पने की योजना बनने लगी | यहीं से आरम्भ हुई, यह सिद्ध करने की योजना कि गौर वर्ण की आर्य जाति बाहर से आक्रमण करने के फलस्वरूप भारत में आयी और वे ही इस संस्कृत साहित्य को अपने साथ लाये थे | यह सर्वविदित है कि आर्य न ही गौर वर्ण के थे और न ही यह कोई जाति थी वरन आर्य शब्द, व्यवहार में शालीनता का सूचक था | यहीं से पैदा की गई यह धारणा कि काले वर्ण की द्रविड़ जातियां भारत के मूल निवासी थे जिन्हें धकेलकर आर्यों द्वारा दक्षिण भारत में भेज दिया गया था | आज की पुरातात्विक एवं वैज्ञानिक शोध से अब यह सिद्ध हो चुका है कि पूरे भारत के मूल निवासी एक ही थे जो कहीं बाहर से नहीं आये थे और भारतीय संस्कृति की प्राचीनता पर शोध विश्व भर में आज जारी है | सन 1835 - 36 में Lord Macaulay ने जब यह देखा कि भारतीय संस्कृति की जड़ें ढीली किये बिना इस देश पर आधिपत्य स्थापित करना संभव नहीं है, तब उन्होंने पूरे देश में व्याप्त भारतीय शिक्षा पद्यति को समाप्त कर अंग्रेजी शिक्षा की नई पद्यति लागू कर दी, जिसने शत प्रतिशत साक्षर भारत-वासियों को तत्काल तो निरक्षर बना ही दिया था, साथ ही अंग्रेजियत के भक्तों के एक समुदाय को भी जन्म दे दिया था, जो आज भी इस देश के लिये एक अभिशाप साबित हो रहा है | भारत 1947 में राजनैतिक रूप से आजाद तो हो गया था लेकिन दिमागी स्तर पर वह अब भी पराधीन है | मुगल बादशाह जहाँगीर ने जब अपने कार्यकाल में ब्रिटेन की महारानी के विशेष दूत को भारत में व्यापार करने की अनुमति दी थी, तब से अब तक पश्चिम ने भारत के साथ क्या व्यवहार किया है, इस इतिहास को विस्तार से समझने के लिये हर भारतवासी को एक अनिवासी अमरीकी नागरिक, राजीव मल्होत्रा की तीन पुस्तकें - "Invading the Sacred ", "Breaking India " एवं "Being Different " पढनी चाहिये | पश्चिमी साम्राज्यवाद का यह खेल अभी भी जारी है, जो अब नये नये रूपों में भारत में रहने वाले कतिपय तत्वों के माध्यम से अपना विघटनकारी खेल चला रहे हैं |

4 . आज भारत पर अमरीका द्वारा प्रायोजित तीन प्रकार के खतरों का साया छाया हुआ है, जिनका उपयोग वह भारत सरकार की नीतियों को प्रभावित करने से कतई नहीं हिचकिचाता | आज़ाद भारत जैसे विशाल संप्रभुता सम्पन्न राष्ट्र के लिये इससे बड़ी लज्जा की बात क्या हो सकती है ? पाकिस्तान के इशारे पर पिछले दो दशकों से देश के लगभग हर भाग में हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष को बढ़ाने के उद्देश्य से आतंकवादी वारदातों को अंजाम दिया जा रहा है, जिनका नेतृत्व प्रशिक्षित पाकिस्तानी नागरिक करते हैं और भारत में निवास करने वाले कुछ उग्रवादी तत्व उन्हें अपना पूरा सहयोग देते हैं | यदि देश के हर नगर के हर मोहल्ले में नागरिकों की सुरक्षा समितियां स्थानीय पुलिस के सहयोग से गठित की जा सकें तो इन वारदातों को रोका जा सकता है | भारत का सामान्य मुस्लिम नागरिक इन घटनाओं से परेशान है | इन घटनाओं से हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष के न बढ़ने से पाकिस्तान परेशान तो रहता है, लेकिन अपनी आदत से बाज़ नहीं आता | दूसरी ओर चीन की शह पर भारत के जन जातीय क्षेत्रों में नक्सल-वाद और माओवाद को पनपाने में विदेशी इसाई मिशनरी पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से वहां के निवासियों में असंतोष फैला रहे हैं | यह सही है कि भारत सरकार की इन क्षेत्रों के आर्थिक विकास की योजनाओं में बड़ी कमियां हैं, जिन्हें दूर किया जाना चाहिये और जिसके लिये भारत सरकार भी इस समस्या को इतना बिगड़ने देने के लिये जिम्मेदार है | तीसरा खतरा है अमरीकी विदेश नीति के तहत धर्मान्तरण के लिये विदेशी इसाई मिशनरी गतिविधियों का देश के हर जिले में तेजी से पिछले दो दशकों से बढ़ना, जिसके विरोध में यदि कहीं हिंसा होती है, तो उसे भारत में अल्प-संख्यक इसाई धर्मावलम्बियों के मानवाधिकारों का हनन माना जाता है | इसे सभी टीवी चैनल तत्काल बढ़ा चढ़ा कर पेश करने में कोई कुताही नहीं बरतते | President Clinton के कार्यकाल में अमरीकी संसद ने धार्मिक मानवाधिकार हनन के मामलों में किसी भी देश में सीधे हस्तक्षेप तक करने का अधिकार प्राप्त कर लिया था | यद्यपि इराक में सैन्य हस्तक्षेप का कारण प्रतिबंधित हथियार रखने और तेल की राजनीति था, फिर भी उसका परिणाम क्या हुआ, यह जगजाहिर है | इराक युद्ध समाप्त होने तक 15 लाख हताहत हुये, 10 लाख से अधिक महिलायें विधवा हुईं, 40 लाख बच्चे निराश्रित हुये और 50 लाख शरणार्थी आसपास के देशों में आज भी भटक रहे हैं, जिसके अतिरिक्त पूरे इराक की तबाही भी हुई |

5 . पिछले प्रस्तर में उल्लिखित तीन खतरों में से पहले दो खतरों पर देश में कुछ न कुछ तो हो रहा है, यद्यपि वह संतोषजनक नहीं कहलायेगा | इनके इलाज के लिये अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है | लेकिन तीसरे खतरे के लिये तो देश में पर्याप्त जागृति भी नहीं है | वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारण में विश्वास रखने वाले सनातन आर्य धर्मावलम्बी समुदाय के लोग 1000 सालों से अधिक अवधि से विदेशी आक्रमण पर आधारित धर्मान्तरण के शिकार होते आये हैं | फिर भी उनकी उदारता में कोई कमी नहीं आयी है | अमरीका के Denver , Colorado नगर में विख्यात अरबपति (अरबों dollars का मालिक) Joshua Project का मुखालय है, जिसका घोषित उद्देश्य है विश्व भर को इसाई बनाना, जिस काम के लिये कोई भी तरीका उचित है | उनमें से एक तरीका है इसाई धर्म के आरम्भ से अब तक जितने ईसाईयों ने धर्मान्तरण का काम करने में अपने प्राण गंवाये हैं, उनके नामों एवं कारनामों का देशवार-जिलेवार संकलन और बलिदानों के रूप में उनका प्रचार ("Being Different" पृष्ठ 289) | भारत के किसी भी स्थान पर किसी भी इसाई की धर्मप्रचार और धर्मान्तरण के दौरान यदि मृत्यु हो जाती है तो उसका व्यापक अतिरंजित प्रचार यह संस्थान बड़ी फुर्ती से

करता है, जिसके अंतर्गत उसके काम के तरीके से, चाहे वह कुछ भी हो, उत्पन्न उत्तेजना का कोई उल्लेख नहीं होता और उसे एक बलिदानी का खिताब दे दिया जाता है। दोषारोपण पूरी तरह से बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय पर इस प्रकार किया जाता है जैसे भारत में अल्पसंख्यक इसाई समुदाय बिलकुल सुरक्षित नहीं हैं।

6. धर्मान्तरण करने के नये नये तरीके अपनाने में इन विदेशी इसाई प्रचारकों की बुद्धि कौशल पर आश्चर्य होता है और भोले भाले साधनहीन भारतीय उनके चंगुल में फंसते चले जाते हैं। तमिलनाडु के समुद्रतट पर वेलंकन्नी - Velankanni नाम के एक स्थान पर यीशु-माता का प्रसिद्ध गिरजाघर है जिसे पिछले लगभग 50 वर्षों से भी पहले से एक मंदिर का स्थान प्राप्त हो चुका है और अपनी मन्त्रों मनाने के लिये इसाई समुदाय के साथ हिन्दू भी कुछ दशकों से यहाँ जाने लगे हैं। प्रारंभ में धर्मान्तरण के लिये स्थानीय मंदिरों और परम्पराओं का ही सहारा लिया जाता है और इन्हीं में प्रभु यीशु और माता मरियम के चित्र अथवा मूर्तियाँ स्थापित कर दी जाती हैं। एक के बाद दूसरी तथा तीसरी पीढ़ी तक में स्थानीय देवताओं की मूर्तियाँ हटा दी जाती हैं और वह गिरजाघर बन जाता है। सनातन आर्य धर्मावलम्बियों की यह धारणा कि सब धर्म एक सामान हैं, का उपयोग उन्हीं के खिलाफ इस प्रकार किया जाता है, कि तब क्यूँ नहीं आप इसाई बन जाते हो, जिसमें उंच-नीच की जातिवादी भावना नहीं है, आदि आदि, जिस दौरान उन्हें तरह तरह के प्रलोभन देना समिलित है। धर्मान्तरण का यह कार्य बड़े व्यवस्थित तरीके से पूरे देश में चल रहा है और प्रत्येक जिले के लिये निर्धारण है कि कितने व्यक्तियों और परिवारों का धर्मान्तरण किस अवधि में होना है। देशवासी इस योजना से पूरी तरह से बेखबर ही हैं। इसका मुकाबला देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुवे कैसे किया जाय, यह एक जटिल प्रश्न हो गया है। सब धर्मों का सम्मान करते हुवे यह प्रयास होना चाहिये कि इन विदेशी भाइयों से शालीनता से अनुरोध किया जाय कि वे अपनी गतिविधियों को इस देश से बाहर ले जाएँ तो ठीक होगा, क्यूँकि यहाँ की समृद्ध धार्मिक परंपरा को किसी विदेशी धर्म की आवश्यकता नहीं है।

7. अप्रैल 2012 में जिस प्रकार दो इतालवी पर्यटकों को छुड़ाने के लिये ओड़िसा में 20 मओवादिओं को कारागार से मुक्त करने की कार्यवाही संपन्न हुई वह जगजाहिर है। क्या यह पर्यटक ही थे अथवा मओवादिओं के मिशनरी मित्र थे? क्या यह पहिली बार भारत आये थे अथवा इनका यहाँ कोई धंधा पहिले से चल रहा था? इन प्रश्नों का उत्तर देने वाला आज कोई नहीं है। यह भारत सरकार और ओड़िसा सरकार के लिये जाँच का विषय होना चाहिये। लेकिन यह आज विश्वासपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह जाँच होगी भी या नहीं और उसका क्या परिणाम होगा। कुछ वर्ष पूर्व स्वामी लक्ष्मणानंद नाम के एक सन्यासी, जो ओड़िसा के जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि का रचनात्मक कार्य बड़े व्यवस्थित तरीके से कर रहे थे, की हत्या विदेशी मिशनरियों के उकसावे पर माओवादियों द्वारा कर दी गई थी, जिसकी प्रतिक्रिया में कुछ विदेशी मिशनरी भी हताहत हुवे थे। इस घटना पर जो अतिरंजित प्रचार TV पर, इसाई धर्मावलम्बियों के मानवाधिकारों के हनन के रूप में हुआ, था वह सर्व विदित है। Joshua Project की website पर यह विदेशी मिशनरी इसाई धर्म के बलिदानी घोषित कर दिये गये। इस से अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है कि किस प्रकार विदेशी मिशनरी भारत में बड़े व्यवस्थित तरीके से अपना काम खामोशी से और लगन से कर रहे हैं, परन्तु देशवासी इसके बारे में कुछ नहीं जानते।

8. वोट की राजनीति पर आधारित अल्प-संख्यक-वाद ने जितना नुकसान भारत के मुस्लिम समाज का किया है, वह हैरान करने वाला है, जिसकी ओर हल्का सा इशारा इस लेख के आरंभ में किया गया | लगभग 800 वर्षों के इस्लामी निजाम के अन्त में मुगल बादशाह बहादुरशाह ज़फर के नेतृत्व में लड़ा गया सन 1857 का पहिला स्वतंत्रता संग्राम, हिन्दू और मुस्लिमान दोनों के संयुक्त मोर्चे में सम्पन्न हुआ था, जो रण-नैतिक चूक के कारण विफल हुआ था | उसके बाद मुसलमानों पर बहुत ज्यादा जुल्म ढाये गये और तभी से ही आधुनिक काल में हिन्दू-मुस्लिम विभेद का नया सिलसिला आरम्भ हुआ था | अंग्रेजों को मालूम पड़ चुका था कि हिंदुस्तान पर अपनी हुकूमत बनाये रखने के लिये इन दोनों समुदायों को भविष्य में कभी मिलने नहीं देना होगा और यही सोच कर, 1947 में भारत और पाकिस्तान दो राष्ट्रों को जबरदस्ती जन्म दे दिया गया, जिसके हजारों घाव दोनों देश आज तक सहला रहे हैं | उसके बाद भी यदि पूरा अवसर होते हुवे भी भारत में मुस्लिम समाज पिछले 60 वर्षों में अपने को अलग और तिरस्कृत मानता है, तो इसके लिये उनका नेतृत्व ही ज़िम्मेदार है | भारत में पारसी समाज सबसे छोटा अल्प-संख्यक स्वाभिमानी समाज है जिसे किसी आरक्षण की आवश्यकता नहीं है, लेकिन वे देश के सभी क्षेत्रों के सर्वोच्च पदों को सुशोभित कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं, पर उनमें किसी प्रकार की हीनता की भावना नहीं है | क्या मुस्लिम समाज का नेतृत्व इस से कोई सबक लेना ठीक नहीं मानता है ? क्या आरक्षण का झुनझुना मुस्लिम समाज के स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुंचाएगा ? इन नेताओं की जिन नीतियों एवं सोच के कारण मुस्लिम समाज की दशा स्वतंत्र भारत में आज तक ठीक नहीं हुई है, उन्हें यदि सुधारा नहीं गया तो इसके परिणाम उन्हीं को भुगतने पड़ेंगे | क्या प्रदेश में हाल के विधान सभा चुनावों के बाद उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय मंत्री, मुहम्मद आजम खान और देहली की जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी के बीच विधान परिषद् के टिकट वितरण से उपजी परस्पर बयानबाज़ी, इस दिशा में भविष्य का कोई संकेत हो सकता है ?

9. देश की पंथ-निरपेक्ष सामाजिक और राज्य व्यवस्था के अंतर्गत सभी देशवासियों से यह अनुरोध होना चाहिये कि सभी धर्मों के समुदाय आपसी सद्भाव को ध्यान में रखते हुवे इन विदेशी भाइयों से अनुरोध करें, कि वे इस देश की सुरक्षा के खातिर इसकी समेकित संस्कृति का सम्मान करना आरम्भ करें और यहाँ किसी प्रकार का सामाजिक विद्वेष न फैलायें | भारत में पहिले से स्थित इसाई धर्मस्थलों के सञ्चालन में कभी कोई कठिनाई आयी हो, ऐसा सुनने को नहीं मिला है - अतः क्या यह उचित नहीं होगा कि इन इसाई धर्मस्थलों के प्रमुख पादरी अब यह घोषणा करें, कि भारत में बाहर से धर्मान्तरण करने के लिये कोई विदेशी मिशनरी भारत में नहीं आये - इस काम में उनको भारत के संविधान के अंतर्गत पूरी धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है और क्या वे अपने इस काम को सही अंजाम देने में किसी विदेशी से कम हैं ? भारत के संविधान में सभी नागरिकों को समुचित अधिकार प्राप्त हैं और उसके भाग IV और भाग IVA के अंतर्गत ऐसे प्रावधान हैं जिनमें हर नागरिक के क्या कर्तव्य हैं, उनका उल्लेख है | इन दो भागों पर आधारित एक समग्र सामाजिक रचनात्मक अभियान देश में चलाने की आज जरूरत है, जो पंथ और जातियों की सोच से परे, इस देश की पूरी राज्य व्यवस्था को जागरूक रखे, ताकि वह सुशासन की ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर इस देश की जनता की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर अपनी व्यवस्था संचालित करे | कई मोर्चों पर काम होना है जैसे - चुनाव सुधार, लोकपाल बिल, प्रशासनिक सुधार, न्याय व्यवस्था में सुधार, शिक्षा व्यवस्था में सुधार, आर्थिक व्यवस्था में सुधार, आदि |

पंचायतों के द्वारा विकेन्द्रित प्रशासन व्यवस्था और वर्षा-जल-संरक्षण पर आधारित टिकाऊ विकेन्द्रित विकास की योजनाओं का सञ्चालन आज की परम आवश्यकता है | विकेन्द्रित प्रशासन व्यवस्था और विकास का अर्थ है, हर ग्राम एवं मोहल्ला स्तर पर स्थानीय निवासियों के माध्यम से एवं उनके सहयोग की समुचित व्यवस्था से यह सम्पन्न होना | 73 वाँ संविधान संशोधन पंचायत व्यवस्था के साथ एक बड़ा खिलवाड़ था जिसे तत्काल ठीक किया जाना चाहिये, ताकि सही तरीके से पंचायतों का सञ्चालन हो सके | जब से 1986 में, World Bank द्वारा पोषित Ganga Action Plan आरम्भ हुआ है, तब से देश के हर नगर का sewerage - मल की अविरल धारा, उस नगर के समीप नदी में बहाई जा रही है, जहाँ से उस नगर की पेयजल योजना के माध्यम से उस नगर के हर घर को पेयजल की आपूर्ति की जा रही है और जिस पानी में इस मल के Coliform नाम के कीटाणु भरे रहते हैं | यदि आज देश के हर बच्चे को पेट की बीमारी है तो इसमें आश्चर्य क्यों ? गंगा और यमुना समेत देश की हर नदी धीरे धीरे नष्ट-भ्रष्ट हुई जा रही है | World Bank और विदेशी पूँजी का देश के विकास में इस प्रकार उपयोग होना चाहिये कि विकास के स्थान पर विनाश न हो और देश की संप्रभुता प्रभावित न हो | बिगड़ते हुवे पर्यावरण के उपचार के लिये अब यह आवश्यक हो गया है कि महात्मा गाँधी द्वारा निर्धारित तीन मंत्र - Reduce consumption अर्थात् उपभोग में संयम, Reuse material अर्थात् वस्तुओं का पुनरुपयोग, Recycle waste अर्थात् व्यर्थ पदार्थों का पुनर्निर्माण करने को भारत का हर नागरिक अपनाये | अपनी पुस्तक "Being Different" के अन्त में राजीव मल्होत्रा ने यह आशा व्यक्त की है कि आज विश्व में महात्मा गाँधी की सन 1909 में लिखी पुस्तक "हिन्द स्वराज" के विचारों पर आधारित एक विचार क्रांति अभियान चलाना होगा, जो सब देशों को एवं उनमें निवास करनेवाले सभी लोगों को इस बात के लिये राजी करे, कि अब परस्पर सहयोग से ही दुनिया चल सकती है, अन्यथा पूरा विश्व विनाश की ओर बढ़ता जायेगा | स्मरण रहे कि एक सार्वभौमिक "विचार क्रांति अभियान", गायत्री परिवार के प्रणेता पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा भारत में अपनी मासिक पत्रिका "अखंड ज्योति" के माध्यम से सन 1937 से आरम्भ किया गया था | महात्मा गाँधी ने संसार की सात बड़ी गलतियों का उल्लेख किया है - Mahatma Gandhi's list of seven blunders of the world - (i) Wealth without work - बिना काम के दौलत ; (ii) Pleasure without conscience - बिना विवेक के उपभोग ; (iii) Knowledge without character - बिना चरित्र के ज्ञान ; (iv) Commerce without morality - बिना नैतिकता के व्यापार ; (v) Science without humanity - बिना मानवता के विज्ञान ; (vi) worship without sacrifice - बिना त्याग के उपासना and - एवं (vii) Politics without principles - बिना सिद्धांत के राजनीति |